REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक नागपूर के आर्थिक एंवम प्रशासनिक कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन
(कालावधी प्रारंभ से २००७ तक)

कु. निशिता गोपाल चिमोटे१ , डॉ. बबन भाऊरावजी तायवाडे२
१अनुसन्धानकर्ती
२ मार्गदर्शक , प्राचार्य , धनवटे नॅशनल कॉलेज, नागपूर.

सारांश

साहूकार एव अमीर वर्ग से सर्वसामान्य गरीब वर्ग से सर्वसामान्य गरीब वर्ग पर होनेवाले शोषण को रोकना एव विशिष्ट पुँजीकर वर्ग के राष्ट्रीकृत बैंक पर होने वाले वर्चस्व को नष्ट करना एव नागरी व ग्रामीण भाग के लोगो को बैंक की सुविधा का लाभ प्राप्त करके देना एव सर्वसामान्य आवश्यक नागरिको को आर्थिक आवश्कता की पूर्ती करना। इन सभी महत्वपुर्ण कार्य के लिए सहकारी बैंको की स्थापना की गयी हैं। उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखकर ही शोध-छात्र ने निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक तथा अन्य को-ऑपरेटिव्ह बैंक का अध्ययन के लिए चयन किया है।

प्रस्तावना

वर्तमान जीवन कि समस्याओं को देखते हुए सहकारिता की अत्यंत आवश्यकता हैं। सहकारिता की भावना इस सिद्धान्त पर स्थित है की समाज के व्यक्ति परस्पर मिलजुल कर स्वेच्छा से कार्य करे। हर व्यक्ति के पास इतना धन नही होता की वह अपना निजी व्यवसाय प्रारंभ कर सके लेकिन सहकारिता के आधार पर कुछ व्यक्ति मिलकर अपना उद्योग धन्दा चला सकते हैं। और उससे होनेवाले लाभ के आधार पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती कर सकते हैं। इस दृष्टि से सहकारिता कि भावना संगठन का महत्वपूर्ण रूप है।

"एक से दो भले, क्योंकि उन्हें अपने श्रम के बदले अच्छा प्रतिफल मिलता हैं। कारण यदि वे गिरते हैं, तो एक दुसरे को उपर उठाएगे किन्तु वह व्यक्ति अभागा है जो गिरते समय अकेला हैं और जिसे उठाने के लिए कोई साथी उपलब्ध नही है।"

सहकारिता

सहकारिता का सबंध सिर्फ मानविय जीवन से नही तो संपूर्ण सृष्टि में सहकारिता व्याप्त हैं। चीटी व मधुमक्खी इत्यादी किटको के जीवन पद्धती में भी सहकारिता का विविध उदाहरण दिखाई देता हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने नियोजित आर्थिक विकास कि निती अवलंबित कि और ऐसा ध्यान में आया कि यह तब ही सफल हो सकती है जब लोगो का सहकार्य प्राप्त होगा सहकार भी एक सामाजिक उतार-चढाव हैं।

भारत के विकास कार्यक्रम को सफल करने के लिए सहकार यह एक प्रमुख माध्यम हैं। अर्थात देश कि प्रगती सहकारिता पर ही अवलंबित हैं। सहकारिता संगठन का एक स्वरूप हैं। जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने आर्थिक हितों कि

वृद्धि के हेतु समानता के आधार पर स्वेच्छापूर्वक सम्मिलित होते हैं जो लोग इस प्रकार साथ मिलते हैं। उनका एक सामान्य आर्थिक उद्देश्य होता है, जिसको वे अपने निजी व्यक्ति कार्य से पूरा नहीं कर सकते क्योंकि उनमें से अधिकांश व्यक्तियों कि आर्थिक स्थिती कमजोर होती हैं इस व्यक्तिगत कमजोरी को अपने साधनो को एकत्र करके, परस्पर सहायता द्वारा आत्म-साहायता को प्रभावशाली बनाकर तथा अपनी नैतिकता को ठोस बनाकर दूर किया जाता हैं।

उद्देश्य

१. निर्मल सहकारी बैंक के कार्य का अन्य सहकारी बैंकों से तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका १: अन्य बैंको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना करने केसंदर्भ में निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संचालकों की प्रतिक्रिया

अन्य बैंको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना	निर्मल अर्बन को-ऑपरेटीव्ह बैंक	
	संख्या	प्रतिशत
हाँ	१७०	८१.०
नही	४०	१९.०
कुल	**२१०**	**१००**

तालिका १में अन्य बैंको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना करने केसंदर्भ में निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संचालकों की प्रतिक्रियाएँ दर्शाई गई है। तालिका में प्रदर्शित जानकारी के अनुसार निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक मे कार्यरत ८१ प्रतिशत संचालकों ने अन्य बैंको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना की है वहीं अन्य बैंको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना न करनेवाले संचालकों का प्रतिशत १९ प्रतिशत है। उपरोक्त जानकारी के आधार पर निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के अधिकांश संचालकों ने अन्य बैंको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना की है।

तालिका २: निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संचालकों अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन के लिए चयनित घटकोंसंबंधी जानकारी

तुलनात्मक अध्ययन के लिए चयनित घटक	निर्मल अर्बन को-ऑपरेटीव्ह बैंक	
	संख्या	प्रतिशत
आर्थिक लाभ	१२१	७१.२
N. P. A.	११६	६८.२
तरलता	१७०	१००
अन्य	९२	५४.१

तालिका २मेंनिर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संचालकों अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन के लिए चयनित घटकोंसंबंधी जानकारी दर्शाई गई है। उपरोक्त तालिका में प्रस्तूत जानकारी के अनुसार निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक मे कार्यरत १०० प्रतिशत संचालकोंने अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन के लिए तरलता इस घटक का चयन किया तथा अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन के लिए आर्थिक लाभ, **N. P. A.**वअन्य घटकों का चयन

करनेवाले संचालकों का प्रतिशत क्रमशः ७१.२ प्रतिशत, ६८.२ प्रतिशत एवं ५४.१ प्रतिशत है। उपरोक्त जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि, निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संचालकों अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन हेतू एक से अधिक घटकों का चयन किया है जिनमें आर्थिक लाभ, एन्.पी.ए., तरलता एवं अन्य घटकों का समावेश है, तथापी सभी संचालकों ने अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन के लिए तरलता इस घटक का मुख्यरूप से चयन किया है।

तालिका ३: अन्य सहकारी बैंक की तुलना में बैंक के कार्य के संदर्भ में निर्मल अर्बन को-ऑपरेटीव्ह बैंक के सभासदों की प्रतिक्रिया

अन्य सहकारी बैंक की तुलना में बैंक के कार्य	निर्मल अर्बन को-ऑपरेटीव्ह बैंक	
	संख्या	प्रतिशत
अच्छा	३१५	६३
सामान्य	१५३	३०.६
असमाधानकारक	३२	६.४
कुल	५००	१००

तालिका ३ मेंअन्य सहकारी बैंक की तुलना में बैंक के कार्य के संदर्भ मेंनिर्मल अर्बन को-ऑपरेटीव्ह बैंक के सभासदों की प्रतिक्रियाएँ दर्शाई गई है। उपरोक्त जानकारी के अनुसार निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के ६३ प्रतिशत सभासदों के अनुसार अन्य सहकारी बैंक की तुलना में बैंक के कार्य अच्छा है, वहीं अन्य सहकारी बैंक की तुलना में बैंक के कार्य सामान्य तथा असमाधानकारक है यह प्रतिक्रिया देनेवाले सभासदों का प्रतिशत ३०.६ प्रतिशत तथा ६.४ प्रतिशत है। उपरोक्त जानकारी के आधार पर निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के अधिकांश सभासदों अनुसार अन्य सहकारी बैंक की तुलना में निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक का कार्य अच्छा है।

निष्कर्ष

निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के अधिकांश संचालक अन्य बँको के कार्य से निर्मल अर्बन बैंक के कार्य की तुलना करते है। निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संचालकों अन्य बँको से तुलनात्मक अध्ययन हेतू एक से अधिक घटकों का चयन किया है जिनमें आर्थिक लाभ, एन्.पी.ए., तरलता एवं अन्य घटकों का समावेश है, तथापी सभी संचालक अन्य बैंको से तुलनात्मक अध्ययन के लिए तरलता इस घटक का मुख्यरूप से चयन करते है। अन्य को-ऑपरेटिव्ह बैंक के सभासदों की तुलना में निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के सार्थक रूप से अधिक सभासद बैंक के कार्य से समाधानीहै। आधार पर निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक के अधिकांश सभासदों अनूसार अन्य सहकारी बैंक की तुलना में निर्मल अर्बन को-ऑपरेटिव्ह बैंक का कार्य अच्छा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- मालीराम एवं शर्मा जी.एल., बैंकिंग विधि एवं व्यवहार रमेश बुक डियो, जयपुर
- पाण्डेय श्रीधर, भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि व्यवस्था, प्रकृति एवं समस्यायें
- दुबे आर. एन. एवं सिन्हा बी. सी., आर्थिक विकास एवं नियोजन नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली १९८९
- जैन हेमचन्द्र, कृषि वित्त सिध्दांत एवं व्यवहार, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल १९९०
- मामोरिया जैन, भारतीय अर्थव्यवस्था साहित्य भवन आगरा -१९९०

- मुखर्जी रविन्द्रनाथ, सामाजिक शोध एंव सांख्यिकी विवेक प्रकाशन नई दिल्ली १९९०
- श्रीवास्तव ओ.एस., मध्य प्रदेश का आर्थिक विकास म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल १९८७
- डॉ. एस.एम. शुक्ल, सांख्यिकी सिध्दांत एवं व्यवहार
- आर. एल. कटारिया, सांख्यिकी सिध्दांत एवं व्यवहार रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- नागर कैलाशनाथ, सांख्यिकी के मूल तत्व, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ–२००४
- डॉ. गुप्ता बी.एन., सांख्यिकी, साहित्य भवन, आगरा
- वार्ष्णेय पी.एन., बैंकिंग विधि एवं व्यवहार सुलतानचन्द्र एण्ड संस, नई दिल्ली
- जैन बी. एम., शोध प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीक रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर १९०–९१
- डॉ. विजय पारख, डॉ. ज्ञानचंद्र रिवमेसरा, मुद्रा बैंकिंग एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
- प्रो. आर. एल. मित्तल, प्रबंधकीय अर्थशास्त्र राजीव प्रकाशन, मेरठ
- रमेशचन्द्र शर्मा, एडवांस बैंकिंग राजीव प्रकाशन, मेरठ
- हरसरन दास, "क्षेत्र प्रबंध एवं उत्पादन अर्थशास्त्र" रामा पब्लिशिंग हाऊस बड़ोत, मेरठ १९९३
- मिश्र एवं पुरी, "भारतीय अर्थव्यवस्था" हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, मुम्बई १९९७
- डॉ. कुमार प्रमिला, मध्यप्रदेश का प्रादेशिक भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल – १९८७
- डॉ. शुक्ल एवं सहाय, व्यावसायिक सांख्यिकी साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा २००५
- शर्मा टी. आर. एवं वार्ष्णेय जे. सी., भारत में आर्थिक नियोजन, साहित्य भवन आगरा – १९
- आर्थिक समीक्षा २०१०–११, वित्त एवं कंपनी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली
- भारत में बैंकिंग प्रवृत्ति एवं प्रगति संबंधी रिर्पोट, रिवर्ज बैंक ऑफ इण्डिया
- जिल्हा सांख्यिकीय पुस्तिका २०१०–११, जिल्हा सांख्यिकीय कार्यालय नागपूर
- उद्योग व्यापार पत्रिका, इण्डियन ट्रेड प्रमोशन आर्गेनाइजेशन, प्रगति मैदान, नई दिल्ली
- आई.बी.ए. बुलेटिन, इण्डियन बैंक एसोसियेशन, मुंबई
- कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली जुलाई २००६ से जून २०११
- योजना, योजना भवन संसद मार्ग नई दिल्ली
- जिला वार्षिक साख योजना २००६–०७ से २०१०–११, बैंक ऑफ इण्डिया नागपूर
- वार्षिक प्रतिवेदन, नर्मदा मालवा ग्रामीण बैंक प्रधान कार्यालय, सिहोर
- दैनिक भास्कर,
- नई दुनिया